11119CH01

प्रथम अध्याय

संस्कृत भाषा—उद्भव एवं विकास

संसार की उपलब्ध भाषाओं में संस्कृत प्राचीनतम है। इस भाषा में प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बहुत बड़ा भण्डार है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक इस भाषा में रचनाएँ होती रही हैं, साहित्य लिखा जाता रहा है। जिन दिनों लिखने के साधन विकसित नहीं थे, उन दिनों भी इस भाषा की रचनाएँ मौखिक परम्परा से चल रही थीं। उस परम्परा की रचनाएँ जो आज बची हैं, अक्षरश: सुरक्षित हैं। यही नहीं, उनके उच्चारण की विधि भी पूर्ववत् है, उसमें कोई मौलिक परिवर्तन नहीं हुआ है।

संस्कृत भाषा को देववाणी या सुरभारती कहा जाता है। इस भाषा में साहित्य की धारा कभी नहीं सूखी, यह बात इसकी अमरता को प्रमाणित करती है। मानवजीवन के सभी पक्षों पर समान रूप से प्रकाश डालने वाली इस भाषा की रचनाएँ हमारे देश की प्राचीन दृष्टि की व्यापकता सिद्ध करती हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (सम्पूर्ण पृथ्वी ही हमारा परिवार है) का उद्घोष संस्कृत भाषा साहित्य की ही देन है।

संस्कृत भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भारोपीय परिवार की भाषा है। ग्रीक, लैटिन, अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी, स्पेनी आदि यूरोपीय भाषाएँ भी इसी परिवार की भाषाएँ कही गई हैं। यही कारण है कि इन भाषाओं में संस्कृत शब्दों जैसी ही ध्वनि और अर्थ वाले अनेक शब्द मिलते हैं।[1] ईरानी भाषा तो संस्कृत से बहुत अधिक मिलती है। पिछले दो-सौ वर्षों में यूरोपीय विद्वानों ने संस्कृत का पर्याप्त अध्ययन इन भाषाओं से तुलना के आधार पर किया है। इस दृष्टि से संस्कृत भाषा विदेशों में अत्यधिक आदर पा चुकी है। आज भी यूरोपीय भाषाओं का ऐतिहासिक अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अनुशीलन विदेशी शिक्षा-संस्थाओं में भी अनिवार्य रूप से किया जाता है।

हमारे देश की प्राय: सभी आधुनिक भाषाएँ संस्कृत से जुड़ी हैं। हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला, ओड़िआ, असमिया, पंजाबी, सिन्धी आदि भाषाएँ भी इससे विकसित

1 तुलनीय–संस्कृत-अस्ति, लैटिन-एस्त, फारसी-अस्त। ये सभी समानार्थक हैं।

© NCERT not to be republished

हुई हैं। दक्षिण भारत की तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम में भी संस्कृत के बहुत से शब्द मिलते हैं जिन्हें उन भाषाओं ने अपने ढंग से अपनाया है। इसी प्रकार दक्षिण भारत की इन द्रविड-भाषाओं से संस्कृत ने भी समय-समय पर अनेक शब्द लिए हैं तथा उन्हें अपने रूप में ढाल लिया है। यही कारण है कि पृथक् भाषा परिवारों की होने पर भी दोनों का परस्पर सामञ्जस्य है। संस्कृत भाषा ने राष्ट्र की एकता के लिए बहुत बड़ा कार्य किया है। विष्णुपुराण की उक्ति है —

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं प्राहुर्भारती यत्र सन्ततिः।।

जो देश (वर्ष) समुद्र (हिन्द महासागर) के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में अवस्थित है उसे पहले के लोगों ने *'भारत'* कहा है। वहाँ की प्रजा *'भारती' (भारतीय)* कहलाती है।

संस्कृत भाषा सहस्रों वर्षों से चली आ रही है। इस अवधि में इसका रूप परिवर्तित होता रहा है। भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार आधुनिक भाषाओं तक इसके विकास की प्रक्रिया इस प्रकार रही है —

1. **प्राचीन आर्य भाषा काल** (6000 ई. पू. – 800 ई. पू.)– इस काल में वैदिक भाषा और प्राचीन संस्कृत भाषा के विकास की प्रक्रिया चलती रही।
2. **मध्यकालीन आर्य भाषा काल (**800 ई. पू. –1000 ई.)– इस काल में पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ। शिक्षित समाज में संस्कृत का प्रयोग होता रहा तथा अधिकांश प्रामाणिक ग्रन्थ इसी समय में लिखे गए। इस काल में जन-सामान्य में संस्कृत भाषा का प्रयोग बहुत अधिक नहीं रहा, किन्तु इसके प्रति सम्मान का भाव पूर्ववत् बना रहा।
3. **आधुनिक आर्य भाषा काल** (1000 ई. – अब तक)– इस काल में विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली अपभ्रंश-भाषाओं से आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ। द्रविड परिवार की भाषाओं को छोड़कर हिन्दी, मराठी आदि उपर्युक्त सभी भाषाएँ इसके अंतर्गत हैं। इन सभी भाषाओं में पर्याप्त साहित्य रचा गया। इस काल में भी संस्कृत भाषा द्वितीय युग के समान शिक्षित जनसमुदाय में प्रचलित रही, इसमें रचनाएँ भी होती रहीं। प्रादेशिक भाषाओं में भी मुख्यत: ग्रन्थ-लेखन का कार्य उन्हीं लोगों ने किया, जो संस्कृत के पण्डित थे, क्योंकि संस्कृत भाषा के अभाव में शिक्षा की कल्पना ही नहीं हो सकती थी। इस काल में विदेशी शासन का आरम्भ हुआ, जिससे तुर्की, अरबी और फारसी भाषाएँ भारत में शासकों द्वारा लाई गईं। इनका

© NCERT not to be republished

प्रभाव आधुनिक आर्य भाषाओं के शब्दकोश पर पड़ा, जिससे बहुत से नए शब्द इन भाषाओं से आर्य भाषाओं में आ गए। संस्कृत भाषा इस आदान-प्रदान से अधिक प्रभावित नहीं हुई।

भाषा के रूप

किसी भी भाषा के दो रूप होते हैं — व्यावहारिक अर्थात् बोलचाल में आने वाली भाषा तथा स्थिरता पाने वाली साहित्यिक भाषा। बोलचाल की संस्कृत भाषा का प्राचीन रूप भास, कालिदास, शूद्रक आदि के नाटकों में प्राप्त होता है। सामान्यत: संस्कृत में जो साहित्य सुरक्षित है वह उसके साहित्यिक रूप का प्रतिनिधि है।

निश्चित रूप से बोलचाल की भाषा सरल तथा रूढ़िमुक्त रहती है। दूसरी ओर, साहित्यिक भाषा परिष्कृत तथा अलंकृत होने लगती है। बोली जाने वाली संस्कृत भाषा व्याकरण और उच्चारण के अनुशासन से मुक्त होकर धीरे-धीरे पालि, प्राकृत आदि परवर्ती भाषाओं के रूप में बदल गई, जबकि इसका साहित्यिक रूप क्रमश: कठिनाई की ओर बढ़ा।

संस्कृत का साहित्यिक विकास

प्राचीन आर्य भाषा काल में संस्कृत के अनेक रूप मिलते हैं, किन्तु इस काल के अन्त में जब पाणिनि (700 ई. पू.) के व्याकरण से इसे परिनिष्ठित रूप मिला, तब रूपों की अस्थिरता समाप्त हो गई और भाषा एक ही रूप में स्थिर हो गई। इस काल के बाद सभी संस्कृत ग्रन्थ इसी नियत भाषा में लिखे गए। इसका परिणाम यह हुआ कि संस्कृत की वाचिक धारा पालि, प्राकृत आदि भाषाओं के रूप में परिवर्तित हो गई। संस्कृत का रूप तो आज तक पाणिनि के व्याकरण पर ही आश्रित है परन्तु इसमें अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का आगमन होता रहा। पाणिनीय व्याकरण का अनुसरण करने वाले संस्कृत साहित्य को **लौकिक** साहित्य कहते हैं। वस्तुत: इस शब्द का प्रयोग वैदिक साहित्य से भिन्न समस्त संस्कृत साहित्य के लिए किया जाता है। इस अर्थ में लौकिक संस्कृत साहित्य, रामायण, महाभारत और पुराणों को भी समाविष्ट कर लेता है, भले ही इनमें पाणिनि के नियमों का यत्र-तत्र उल्लंघन भी है।

संस्कृत में साहित्यिक भाषा की क्रमश: दो धाराएँ मिलती हैं— वैदिक संस्कृत की धारा तथा लौकिक संस्कृत की धारा। वैदिक संस्कृत की धारा भी अनेक रूपों में है। प्राचीनतम वेद ऋग्वेद की भाषा अन्य सर्वत्र एक समान नहीं है। अन्य वेदों में जो भाषा का

2019-2020

रूप प्राप्त होता है, उसमें सरलीकरण की प्रवृत्ति दिखाई देती है। शब्दरूपों और धातुरूपों की अनियमितता तथा अनेकता क्रमश: दूर होती जाती है। अन्य वेदों में हमें गद्य भी मिलता है, जबकि पूरी ऋग्वेद-संहिता पद्यात्मक है। संहिताओं के बाद उनकी व्याख्याओं के रूप में ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। यद्यपि इन सब में सामान्य रूप से वैदिक संस्कृत ही प्रयुक्त है, किन्तु वह संस्कृत लौकिक संस्कृत की ओर अभिमुख दिखाई पड़ती है।

वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत के सन्धिकाल में हमें रामायण तथा महाभारत जैसे ग्रन्थ मिलते हैं। इन ग्रन्थों की भाषा में वैदिक वाक्यों जैसी सरलता है तथा जटिल शब्दरूपों का अभाव है। इन ग्रन्थों की भाषा ने लौकिक संस्कृत साहित्य को विकास का मार्ग दिखाया। इसी काल में संस्कृत व्याकरण के सुप्रसिद्ध लेखक पाणिनि का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने समय में प्रचलित संस्कृत भाषा का व्यापक अनुशीलन करके *अष्टाध्यायी* नामक ग्रन्थ में भाषा-सम्बधी नियम बनाए। उन्होंने तुलना के लिए वैदिक भाषा के विषय में भी अपने निष्कर्ष को सूत्र-रूप में उपस्थित किया। पाणिनि ने वेदों की भाषा को सामान्य रूप से *छन्दस्* और लौकिक संस्कृत को केवल *भाषा* कहा है। पाणिनि के बाद विकसित संस्कृत साहित्य में उसी भाषा का उपयोग होने लगा। कवियों और लेखकों की शैली में जो भी अन्तर रहा हो, भाषा वही रही। अन्य वैयाकरणों ने भी पाणिनि के द्वारा स्थापित भाषा को ही मानक स्वीकार कर अपने-अपने व्याकरण लिखे।

संस्कृत के साहित्यिक विकास को चार चरणों में देख सकते हैं – (1) वैदिक साहित्य (2) रामायण व महाभारत (3) मध्यवर्ती संस्कृत साहित्य तथा (4) आधुनिक संस्कृत साहित्य। शास्त्र-ग्रन्थों की रचना सभी चरणों में होती रही थी। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से इन चरणों का काल इस प्रकार माना जा सकता है–

(1) वैदिक साहित्य (6000 ई.पू. से 800 ई. पू.), (2) रामायण व महाभारत (800 ई.पू. से 300 ई. पू.), (3) मध्यवर्ती संस्कृत साहित्य (300 ई.पू. से 1784 ई. जिसमें महाकाव्य, नाटक, खण्डकाव्य आदि विधाओं के सरल तथा अलंकृत ग्रन्थ लिखे गए) एवं (4) आधुनिक काल (1784 ई. से आज तक)।

वैदिक और लौकिक संस्कृत में भेद

संस्कृत भाषा के वैदिक रूप में सभी वेदों की संहिताएँ, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद्-ग्रन्थ लिखे गए हैं। इसके लौकिक रूप में वेदों का उपयोग बतलाने वाले वेदांग-ग्रन्थ,

© NCERT not to be republished

रामायण, महाभारत, नाटक, काव्य, कथा-साहित्य, आयुर्वेद आदि से संबद्ध ग्रन्थों की रचना विभिन्न युगों में हुई। वैदिक संस्कृत में मुख्यत: धर्मप्रधान साहित्य की रचना हुई, जिसका उपयोग यज्ञ आदि में होता था। लौकिक संस्कृत में जीवन के अन्य अनेक पक्ष भी मिलते हैं। वैदिक संस्कृत का आरम्भ तो पद्य से ही हुआ, किन्तु धीरे-धीरे गद्य का भी साम्राज्य छा गया। लौकिक संस्कृत में पुन: पद्य की प्रतिष्ठा हुई और गद्यरचना का क्षेत्र सीमित हो गया। गद्य लिखना कठिन माना जाने लगा। वैदिक भाषा के छन्दों से लौकिक संस्कृत के छन्दों में भी भिन्नता आई। इस प्रकार संस्कृत के छन्दों में अधिक विविधता आ गई।

भाषा की दृष्टि से वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत से बहुत भिन्न है, किन्तु यह भिन्नता ऐसी नहीं, जैसी संस्कृत और प्राकृत में है। संस्कृत और प्राकृत में ध्वनिगत अन्तर का प्राचुर्य है, जबकि वैदिक और लौकिक संस्कृत में ध्वनिगत अन्तर शून्यप्राय है, विशेष रूप से शब्दगत भेद ही अधिक है। दोनों एक ही भाषा की दो शैलियाँ हैं। वैदिक संस्कृत में शब्द-रूप संख्या में अधिक थे, लौकिक संस्कृत में कम, जैसे— संस्कृत शब्दरूप गन्तुम् (जाने के लिए) है। वैदिक भाषा में इसके अतिरिक्त इसी अर्थ में गन्तवे, गमध्यै, गन्तो: इत्यादि कई रूपों के प्रयोग थे। अकारान्त शब्दों के प्रथमा-बहुवचन में प्रिया:, प्रियास: जैसे दो रूप वैदिक संस्कृत में थे, तृतीया बहुवचन में भी प्रियै: प्रियेभि: जैसे दो रूप यहाँ थे, लौकिक संस्कृत में ये कम होकर, केवल प्रिया: और प्रियै: ही रह गए। इस प्रकार दोनों भाषाओं में मुख्य अन्तर वैदिक भाषा में शब्दों के वैकल्पिक रूपों की अधिकता और लौकिक संस्कृत भाषा में शब्दों के वैकल्पिक रूपों की न्यूनता है।

आधुनिक आर्य भाषाओं से संस्कृत का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऊपर कहा गया है कि संस्कृत भाषा से ही प्राकृत भाषाओं का विकास हुआ। ये भाषाएँ जनसामान्य में प्रचलित हुईं। संस्कृत नाटकों में भी इनका प्रयोग कुछ पात्रों के संवाद के रूप में होने लगा। इसमें स्वतन्त्र ग्रन्थ भी लिखे गए जिनमें काव्यों की संख्या अधिक थी। उधर आरम्भिक बौद्ध साहित्य पालि भाषा में लिखा गया। जैन धर्म के ग्रन्थ अर्धमागधी (प्राकृत का एक भेद) में लिखे गए। प्रथम शताब्दी ई. के बाद से इन धर्मों के ग्रन्थ संस्कृत में भी लिखे जाने लगे। प्राकृत का विकास उत्तरी और मध्य भारत के विविध क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में हुआ। इसलिए प्राकृत के महाराष्ट्री (महाराष्ट्र में), शौरसेनी (पश्चिमी उत्तर प्रदेश में), मागधी (पूर्वी भारत में), अर्धमागधी (पूर्वी उत्तर प्रदेश में) तथा पैशाची (सिन्ध और पश्चिमोत्तर भारत में)। ये मुख्य भेद हैं, जबकि उपभेदों की संख्या अधिक है।

© NCERT not to be republished

इन प्राकृतों से उन-उन नामों वाली अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ। ये भी विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध हुईं। इस काल में संस्कृत शब्द-रूपों की विभक्तियों को मूल शब्द से पृथक् किया गया तथा नये-नये विभक्ति-चिह्नों का विकास हुआ। क्षेत्रीय अपभ्रंश भाषाओं ने पृथक्-पृथक् आधुनिक आर्य भाषाओं को जन्म दिया। महाराष्ट्री अपभ्रंश से मराठी, शौरसेनी से हिन्दी, खस अपभ्रंश से पहाड़ी, ब्राचड़ से गुजराती और सिन्धी, मागधी से बिहार की भोजपुरी, मैथिली और मगही के अतिरिक्त बंगला, ओड़िआ और असमिया तथा अर्धमागधी से पूर्वी उत्तर प्रदेश की बोलियाँ निकलीं। इस प्रकार, आधुनिक आर्य भाषाएँ संस्कृत से विकसित हैं। संस्कृत का व्यापक प्रभाव इन सब पर है।

संस्कृत साहित्य के इतिहास का उद्देश्य

संस्कृत भाषा और साहित्य के विकास का ज्ञान उसके इतिहास से मिलता है। युगों से विभिन्न प्रवृत्तियों के कारण जो साहित्य-प्रकार विकसित हुए हैं, उनका आकलन इतिहास में होता है। हजारों ग्रन्थों की राशि में गुण और महत्त्व की दृष्टि से चुने हुए ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय इतिहास दे देता है तथा पूरे वाङ्मय में उस ग्रन्थ की स्थिति भी बताता है। अकेले पाठक को सम्पूर्ण वाङ्मय का कम समय में परिचय देना इतिहास का काम है। संस्कृत भाषा न जानने वाले लोग भी साहित्य के इतिहास से ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों के विषय में एवं उनके उद्भव की स्थितियों को जान सकते हैं। यह संस्कृत साहित्य के इतिहास की उपयोगिता है।

संस्कृत साहित्य एवं समकालीन प्रवृत्तियाँ

विभिन्न युगों में जो संस्कृत साहित्य का विकास हुआ, वह तात्कालिक परिस्थितियों के अनुरूप था। साहित्य के अनुशीलन से उन परिस्थितियों का अनुमान होता है। वस्तुत: जनसामान्य को ध्यान में रखकर ही साहित्य-प्रवृत्तियाँ पनपती हैं। वैदिक साहित्य के विकास में तात्कालिक धार्मिक जीवन का आभास मिलता है। उस युग में यह भाषा लोकव्यवहार में भी थी, किन्तु यज्ञानुष्ठान, नैतिक नियमों का अनुपालन तथा प्रकृति के उपादानों के प्रति श्रद्धा की भावना का मूल्य अधिक होने से इन पर बल देने वाला वैदिक साहित्य ही सुरक्षित रह सका है। लौकिक साहित्य में लौकिक भावनाओं का प्रकाशन करने वाली सामग्री अत्यल्प है।

लौकिक संस्कृत साहित्य के आरम्भ काल में रामायण में सुन्दर भाषा में आदर्श की स्थापना की गई, जबकि महाभारत में इतिहास के बहाने राजनीति, धर्म, समाज और संस्कृति का यथार्थ प्रकाशित हुआ। पुराणों में सम्पूर्ण भारत के तीर्थस्थलों, आख्यानों एवं

2019-2020

© NCERT not to be republished

इतिहास के अतिरिक्त ज्ञान के अन्यान्य क्षेत्रों को आलोकित करने की प्रवृत्ति है। इन तीनों का अवगाहन जन-जन की अनौपचारिक शिक्षा का स्वरूप था।

परवर्ती साहित्य के विकास में विविध प्रवृत्तियाँ काम करती हैं। आरम्भिक नाटकों तथा काव्यों में भाषा की सरलता यह प्रकट करती है कि सरल संस्कृत व्यापक रूप से प्रचलित थी। अनेक क्षेत्रों में जनता संस्कृत और प्राकृत दोनों समझती और बोलती भी थी। आगे चलकर संस्कृत का भाषिक अनुशासन कठोर हो जाने पर साधारण जनता संस्कृत छोड़कर प्राकृत (तथा अपभ्रंश) की ओर प्रवृत्त होने लगी। किन्तु परिनिष्ठित शिक्षा संस्कृत माध्यम से होने के कारण, शिक्षितों के अनुरूप, संस्कृत साहित्य क्रमश: कठिन होता गया। इस स्थिति में पाण्डित्यपूर्ण काव्य-नाटक-गद्य,पद्य आदि रचे गए। अधिसंख्य साहित्यिक रचनाएँ राजाश्रय में लिखी गईं जिनमें यथार्थ से अधिक अलंकृत अभिव्यक्ति पर बल दिया गया। जनरुचि ऐसी रचनाओं के प्रति हो गई।

भारतवर्ष पर विदेशी आक्रमणों के बाद संस्कृत की धारा पारम्परिक काव्य शैली में नाटक, चम्पू, गद्य-काव्य द्वारा देशी राजाओं की विजय अथवा व्यक्ति-विशेष के वर्णन में प्रवृत्त हुई। दूसरी ओर कुछ काव्यों में विदेशियों के साथ युद्धों का भी निरूपण हुआ।

आधुनिक काल में सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं की ओर संस्कृत साहित्यकारों का ध्यान गया। स्वाधीनता-संग्राम में साहित्य की सर्जना कहीं प्रतीकात्मक, कहीं प्रत्यक्ष रूप से हुई। आज का संस्कृत साहित्य (काव्य, नाटक, लघुकथा, उपन्यास आदि) विधवा-विवाह, दहेज-प्रथा, भ्रष्टाचार, राजनीति, शिक्षा का क्षरण इत्यादि विविध विषयों को रेखांकित करते हुए लिखा गया है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में उतना वैविध्य नहीं था जितना आधुनिक संस्कृत में मिलता है। विभिन्न युगों की प्रवृत्तियों को संस्कृत साहित्य की परम्परा ने आत्मसात् किया है।

लोकव्यवहार

पिछले चार हजार वर्षों में संस्कृत का लोक-व्यवहार विभिन्न रूपों में हो रहा है। वैदिक युग तथा वेदाङ्गों के समय तक जनसामान्य में संस्कृत का व्यापक प्रयोग था। यास्क (800 ई.पू.) ने भाषा शब्द का प्रयोग लोकप्रचलित संस्कृत के अर्थ में किया है। पतञ्जलि ने भाषा की प्रवृत्तियों को लोकाश्रय कहा, उसी का विवेचन (अन्वाख्यान) व्याकरण करता है। वाल्मीकि ने शिष्टजनों में परिष्कृत तथा शेषजनों में साधारण संस्कृत के प्रयोग का संकेत किया है। अपने धर्मप्रचार में जैनों ने प्राकृत तथा बौद्धों ने पालि का भले ही प्रयोग

© NCERT not to be republished

आरम्भ किया था, किन्तु ईसवी सन् के प्रारम्भ से दोनों को शास्त्रीय विचार-विमर्श के लिए संस्कृत का आश्रय लेना पड़ा। पाषाणों, ताम्रपत्रों आदि में अंकित अभिलेख (कुछ अपवादों को छोड़कर), संस्कृत में ही हैं। चीनी यात्री हुएनत्सांग (629 ई.– 643 ई. के बीच भारत भ्रमण करने वाला) के अनुसार बौद्ध लोग सामान्य वाद-विवाद में संस्कृत का प्रयोग करते थे। रामायण और महाभारत का सामान्य जनता में पाठ होता था, जो संस्कृत के सर्वजनगम्य होने का प्रमाण है। कश्मीरी कवि बिल्हण कहते हैं कि उनके प्रदेश में स्त्रियाँ भी संस्कृत-प्राकृत दोनों भाषाएँ समझती हैं, दूसरों का क्या कहना?

यत्र स्त्रीणामपि किमपरं मातृभाषावदेव।
प्रत्यावासं विलसति वच: प्राकृतं संस्कृतं च॥

(विक्रमाङ्कदेवचरित, 18.6)

यह भी ज्ञातव्य है कि दिल्ली सल्तनत के समय (1206 ई. – 1526 ई.) भी अनेक संस्कृत अभिलेख किसी लोक-कल्याण-कार्य के स्मारक के रूप में लिखे गए। भारत के दक्षिण-पूर्वी उपनिवेशों (इंडोनेशिया, थाइलैंड इत्यादि) में चौदहवीं शताब्दी ई. तक राजभाषा के रूप में संस्कृत का प्रचलन था। वहाँ के संस्कृत अभिलेख इसे प्रमाणित करते हैं।

ऐसी स्थिति में यह कहा जा सकता है कि आरम्भ में प्राय: ईसवी सन् की कुछ शताब्दियों तक जनसामान्य में संस्कृत भाषा का प्रयोग होता था। कालक्रम से यह शिष्टजनों तक शिक्षा ग्रन्थ-रचना, वाद-विवाद, शास्त्रार्थ आदि के क्षेत्र में सीमित हो गई। साहित्य-रचना के क्षेत्र में वर्तमान युग तो संस्कृत का वास्तविक स्वर्ण युग है।

ध्यातव्य बिन्दु

- संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषा है।
- संस्कृत भाषा की रचना-धारा निरन्तर प्रवाहशील है।
- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यह उद्घोष संस्कृत भाषा की ही देन है।
- संस्कृत भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भारोपीय परिवार की भाषा है। ग्रीक, लैटिन, अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी, स्पेनी आदि यूरोपीय भाषाएँ इसी परिवार की भाषाएँ हैं।
- सभी आधुनिक भारतीय भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं, जैसे—हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला, ओड़िया, असमिया, पंजाबी, सिन्धी आदि।
- आधुनिक भाषाओं की विकास प्रक्रिया इस प्रकार है—

2019-2020
© NCERT not to be republished

(i) प्राचीन आर्य भाषा काल —इस काल में वैदिक भाषा और प्राचीन संस्कृत भाषा के विकास की प्रक्रिया चली।

(ii) मध्यकालीन आर्य भाषा काल —इस काल में पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ।

(iii) आधुनिक आर्य भाषा काल —इस काल में विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली अपभ्रंश भाषाओं से आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ।

- भाषा के रूप – भाषा के दो रूप होते हैं –
  (i) व्यावहारिक भाषा —बोलचाल की भाषा
  (ii) साहित्यिक भाषा —साहित्य में प्रयुक्त भाषा
- संस्कृत साहित्य का विकास – साहित्यिक भाषा की दो धाराएँ हैं—
  (i) वैदिक संस्कृत की धारा
  (ii) लौकिक संस्कृत की धारा
- वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत के सन्धिकाल में रामायण तथा महाभारत ग्रन्थों की रचना हुई।
- रामायण तथा महाभारत से ही लौकिक संस्कृत का आरम्भ हुआ। इसी बीच सुप्रसिद्ध विद्वान् पाणिनि का आविर्भाव हुआ जिन्होंने अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ में भाषा-सम्बन्धी नियम बनाए।
- संस्कृत का साहित्यिक विकास चार चरणों में विभक्त है—
  (i) वैदिक साहित्य (6000 ई. पू. से 800 ई. पू.)
  (ii) रामायण-महाभारत (800 ई. पू. से 300 ई. पू.)
  (iii) मध्यवर्ती संस्कृत साहित्य (300 ई. से 1784 ई.)
  (iv) आधुनिक काल (1784 से आज तक)
- वैदिक और लौकिक संस्कृत में भेद—
  वैदिक —
  संहिताएँ, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्।
- लौकिक —
  वेदाङ्ग, रामायण, महाभारत, नाटक, काव्य, कथा साहित्य, आयुर्वेद इत्यादि तथा वैज्ञानिक साहित्य।

- संस्कृत भाषा संसार की अत्यन्त प्राचीन भाषा है। इसमें भारतीय सभ्यता और संस्कृति से सम्बद्ध रचनाओं का बहुत बड़ा भण्डार है। इस भाषा में प्राचीन समय से आज तक रचनाएँ होती आ रही हैं। यह भाषा भारोपीय (इंडो-यूरोपियन) परिवार की भाषा है।
- प्राय: 6000 ई. पू. में वैदिक अर्थात् प्राचीन संस्कृत भाषा का विकास माना जाता है। 700 ई. पू. में पाणिनि ने इसे परिनिष्ठित रूप दिया। इस काल के बाद सभी संस्कृत ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे गए। इस प्रकार संस्कृत के वैदिक और लौकिक दो रूप सामने आते हैं। आधुनिक आर्य भाषाओं का संस्कृत से घनिष्ठ सम्बन्ध है। पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं का विकास भी वैदिक तथा लौकिक संस्कृत से ही हुआ है। क्षेत्रीय अपभ्रंश भाषाओं से विभिन्न आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ है। इस प्रकार संस्कृत समस्त आर्य भाषाओं की जननी है।

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. संस्कृत भाषा के महत्त्व को पाँच वाक्यों में लिखिए।

प्र. 2. भारोपीय भाषा परिवार में कौन-कौन सी मुख्य भाषाएँ हैं?

प्र. 3. संस्कृत से विकसित होने वाली भारतीय भाषाओं के नाम लिखिए।

प्र. 4. द्रविड परिवार की कौन-सी भाषाएँ संस्कृत से प्रभावित हैं?

प्र. 5. वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर बताइए।

प्र. 6. संस्कृत साहित्य के इतिहास का क्या उद्देश्य है?

प्र. 7. प्राकृत के कौन-कौन से मुख्य भेद हैं?

प्र. 8. रिक्त स्थान भरिए —

(क) .... नामक ग्रन्थ में भाषा-सम्बन्धी नियम बताए गए हैं।

(ख) .... भाषा से हिन्दी का विकास हुआ है।

(ग) आरम्भिक बौद्ध साहित्य .... भाषा में लिखा गया।

(घ) वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत के सन्धि-काल में हमें............................. और .... जैसे ग्रन्थ मिलते हैं।

प्र. 9. "क" स्तम्भ में दिए गए परिवारों से "ख" स्तम्भ में दी गई भाषाओं को मिलाइए।

स्तम्भ क	**स्तम्भ ख**
भारत-यूरोपीय परिवार	मराठी, ग्रीक, लैटिन, तेलुगु, कन्नड़
द्रविड परिवार	संस्कृत, ओड़िया, हिन्दी, मलयालम
	अंग्रेजी, पंजाबी, रूसी, तमिल।

not to be republished © NCERT
2019-2020